5. 'धार' कविता का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'गीत फ़रोश' कविता की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए।

29/5/23 (M)

[This question paper contains 8 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3985 E

Unique Paper Code : 12051402

Name of the Paper : हिंदी कविता (छायावाद के बाद)

Name of the Course : B. A (Hon) Hindi

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

Ramanujan College Library

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए: (7.5×2=15)

(क) अधेड़ उम्र का मुच्छड़ रोबीला चेहरा

आहिस्ते से बोला : हाँ सा'ब

लाख कहता हूँ नहीं मानती मुनिया

टाँगे हुए है कई दिनों से

अपनी अमानत

यहाँ अब्बा की नज़रों के सामने

मैं भी सोचता हूँ

क्या बिगाड़ती हैं चूड़ियाँ

किस जुर्म पे हटा दूँ इनको यहाँ से ?

अथवा

जैसे कोई बिजली कौंधा जाए

एक दबी हुई स्मृति

झकझोर जाती है मुझे

और मुझे लगता है कहीं मेरे भीतर भी है

कि पानी नदी में हो

या किसी चेहरे पर

झाँककर देखो तो तल में कचरा

कहीं दिख ही जाता है। (काव्य बिम्ब)

3. 'यह दीप अकेला' कविता की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'सिंदूर तिलकित भाल' कविता का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

4. 'बच्चे काम पर जा रहे हैं' कविता का सार अपने शब्दों में लिखिए। (15)

अथवा

हिंदी ग़ज़ल में दुष्यन्त कुमार का योगदान स्पष्ट कीजिए।

भारत - भाग्य - विधाता है

फटा सुथन्ना पहने जिसका

गुन हरचरना गाता है। (व्यंग्यात्मकता)

(ग) और क्या जाने क्या

उसे दिख गया मेरे भीतर

कि हिल उठा वह

और पूरा का पूरा मैं गिर पड़ा नीचे

शर्मिंदा हूँ प्रभु

और इस घटना पर हिल रहा हूँ अब तक

पर कोई करे तो भी क्या

समय ही कुछ ऐसा है

एक पागल स्त्री

जो दरवाजों को पीटती

और दीवारों को खुरचती हुई

उसी तरह लगा रही है चक्कर

मेरे उपमहाद्वीप के विशाल नक्शे में

न जाने कब से।

(ख) हो गई है पीर पर्वत - सी पिघलनी चाहिए

इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए

आज यह दीवार, परदों की तरह हिलने लगी

शर्त थी लेकिन कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए

हर सड़क पर, हर गली में, हर नगर, हर गाँव में

हाथ लहराते हुए हर लाश चलनी चाहिए

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं

मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए

अथवा

यह गीत सुबह का है, गा कर देखें,

यह गीत गजब का है, ढा कर देखे,

यह गीत जरा सूने में लिखा था,

यह गीत वहाँ पूने में लिखा था।

यह गीत पहाड़ी पर चढ़ जाता है

यह गीत बढ़ाये से बढ़ जाता है

यह गीत भूख और प्यास भगाता है

जी, यह मसान में भूख जगाता है,

यह गीत भुवाली की है हवा हुज़ूर

यह गीत तपेदिक की है दवा हुज़ूर ।

2. निम्नलिखित अवतरणों में से किन्हीं दो का रचना-कौशल स्पष्ट कीजिए। (7.5×2=15)

(क) साँप !

तुम सभ्य तो हुए नहीं

नगर में बसना

भी तुम्हें नहीं आया।

एक बात पूछूँ- (उत्तर दोगे ?)

तब कैसे सीखा डँसना--

विष कहाँ पाया? (मूल संवेदना)

(ख) राष्ट्रगीत में भला कौन वह